Date / /
Page No. 1
Shivlal

समुदाय

समुदाय शब्द का प्रयोग हम किसी बस्ती या गांव जन जाति के लिये करते हैं। जब एक विशेष क्षेत्र में रहने वाले व्यक्ति किसी स्वंय के कारण सम्बन्धित नही होते हैं। बल्कि उसी क्षेत्र में अपना सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं। तब व्यक्ति के ऐसे छोटे या बड़े समुहों को समुदाय कहा जाता है।

जैसे - गाँव, जनजाति आदि।

" गेडिन के अनुसार समुदाय की सभ्यता की नैतिक इकाई के रुप में स्वीकार किया है।

बोगार्डस के अनुसार-। - "समुदाय का विकास विचार पड़ोस से शुरु होकर सम्पूर्ण विश्व में पहुचता है।"

" ऑगबर्न के अनुसार समुदाय सामाजिक जीवन का संपूर्ण संगठन है "

" मैंकाइवर पेज के अनुसार समुदाय सामाजिक जीवन का वह क्षेत्र है। जिसे एक विशेष प्रकार की सामाजिक सम्बन्ध के द्वारा पहचाना जा सकता है।

" सिन्सवर्ग के अनुसार समुदाय का अर्थ सामाजिक प्राणी के एक ऐसे समूह से है जो सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं। इस सम्मानीय जीवन में उन सभी सम्बन्धो समायंकित किया जाता है। जो इसका निर्माण करते हैं।

ग्रीन के अनुसार-। - समुदाय व्यक्तियों का ऐसा समूह जो एक छोटे क्षेत्रीय गृह में रहता है। तथा जिसके सदस्यों से का जीवन का एक सम्मानीय अंग होता है।

-:- समुदाय मुख्य विशेषता -:-

(1) व्यक्ति का बड़ा समूह होता है।
(2) निश्चित भूभाग होता है।
(3) समुदायक हम की भावना होती है।
(4) सम्मानीय जीवन व्यतीत करते है।

-:- समुदाय की द्वितीय विशेषता -:-
(1) स्वतः ही विकास होता है
(2) सम्मानीय आदर्श नियम का पालन करते है।
(3) एक विशिष्ट नाम होता है।
(4) स्थायित्व होता है।
(5) अतः समुदाय की भावना होती है। जैसे - बिहार की एक सन, जन जाति का कोई गांव समुदाय होगा लेकिन इस समुदाय का निर्माण में ही अनेक गोत्रों सामावेश हो सकता है।

-:- समाज तथा समुदाय में अन्तर -:-

	समाज	समुदाय
(1)	समाज निर्माण सामाजिक सम्बन्धो से होता है।	समुदाय व्यक्तियों को बड़ा समूह है।
(2)	सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था होने के कारण समाज की प्रकृति अमूर्त है।	समुदाय व्यक्तियों का समूह है। इस कारण इसकी संरचना को स्पष्ट रूप देखा जा सकता है
(3)	समाज का कोई निश्चित भूभाग नही होता। यह बहुत विस्तृत होता है।	जबकि प्रत्येक समुदाय के सदस्य एक भूभाग में रहे अपना जीवन व्यतीत करते हैं।
(4)	समाज में सहयोग के संघर्ष और समायोजन के प्रतियोगिक है।	समुदाय के विकास में सहयोग पर आधारित सम्बन्ध का विशेष महत्व है।

सामाजिक समूह

सामाजिक समूह :- जब कुछ व्यक्ति किसी विशेष आधार पर अपने ही समान कुछ दूसरे व्यक्ति के सम्पर्क में आते हैं। अथवा उनके प्रति सहानुभूति की भावना रखते हैं। तब व्यक्तियों की अथाव अस्थिई संगठन को सामाजिक समूह कहते हैं।

मैकाइवर पेज के अनुसार :- " समूह से हमारा व्यक्ति एसी संग्रह से है। जो सामाजिक सम्बन्धों के कारण एक दूसरे के समीप हो विनिमय के अनुसार सामाजिक समूह एक दूसरे के साथ क्रिया करते हैं। और एक अन्य सदस्यों द्वारा पहचाने जाते हैं।

समूह का अर्थ अधिक या कम एसी व्यक्तियों से है। जिनके बीच के सम्बन्ध बन जाते हैं। कि उन्हे एक सम्बन्ध इकाई के रूप में देखे जाते हैं।

एक सामाजिक समूह समिति नही होता है क्योंकि यह औपचारिक नही है। और नियम कानून काम भी अधिक उपचारिक नहीं होते।

सामाजिक समूह की विशेषता :-

(1) समूह व्यक्तियों का संग्रह है।
(2) इसकी निश्चित संरचना होती है।
(3) कार्य का विभाजन होता है।
(4) हितों की समानता होती है।
(5) यह एक मनोवैज्ञानिक संगठन है।
(6) इसमें आदर्श नियम की प्रधानता होती है।
(7) अनिश्चित आकार होता है।
(8) एच्छिक होती है।
(9) नियंत्रण का अविकरण होता है।

-|- सामाजिक समूहों के प्रकार -|-
समाजशास्त्रीयों ने भिन्न - 2 आधार पर सामाजिक समूह अनेक प्रकारों का उल्लेख किया है।

-|- कार्य आधार पर समूह -|-
(1) संस्कृति समूह (2) धार्मिक समूह
(3) आर्थिक समूह (4) राजनीतिक समूह
(5) सेवा समूह

-|- स्थिरता के आधार पर -|-

बोटोमॉर के अनुसार
(1) स्थायी समूह (2) अस्थाई समूह

सिमेक और बॉनविन के अनुसार - इन्होंने सदस्यों की संख्या आधार मान कर समूहों का वर्गीकरण किया है।

सिलेर के अनुसार -|- इन्होंने समूहों को छत्तीस समेतक में बांटा है।

गिलिन और गिलिन के अनुसार -|-
(1) रक्त सम्बन्ध समूह
(2) शारीरिक विशेषता पर समूह
(3) क्षेत्रीय समूह
(4) अस्थिर समूह
(5) स्थायी समूह
(6) सस्कृतिक समूह

चार्ल्स कुके के अनुसार -!- इन्होंने समूहों को प्राथमिक समूह में अपनी पुस्तक social organisation में विभाजित किया है।

टीस्टीड के अनुसार -!- समूह को द्वितीय समूह में विभाजित किया है।

	प्राथमिक	द्वितीय
(1)	प्राथमिक समूह के प्राथमिक सम्बन्ध घनिष्ठ होते हैं।	द्वितीय समूह के सदस्यों के बीच दिखावा उपचारिक विशेषता होती है।
(2)	प्राथमिक समूह का व्यक्ति के ऊपर बहुत प्रभाव होता है।	द्वितीयक समूह कानून के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार का नियंत्रित करता है।
(3)	इसके सदस्यों की संख्या दो से 50 तक हो।	यह समूह अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत होते हैं।
(4)	प्राथमिक समूह किसी विशेष लक्ष्य सम्बंधित नहीं होती है।	बल्कि व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन से सम्बंधित हो।

सन्दर्भ समूह की अवधारणा -!- इसका सर्वप्रथम प्रयोग "हाइमैन" ई॰ अपने लेख The status of साइकोलॉजी 1942 में किया था। इनके पश्चात शेरिफ ने अपनी पुस्तक सामाजिक मनोविज्ञान की रूप रेखा व्यापक रूप से प्रस्तुत किया। मार्टन ने भी सन्दर्भ समूह के सन्दर्भ में अपनी अवधारणा प्रस्तुत की है।

सामाजिक समूह में जीवन का महत्व -!-

(1) परस्पर संयोग
(2) समूह से संस्कृति का विकास होता है।
(3) समूह से व्यक्तित्व का विकास है।
(4) परस्पर संयोग।
(5) समूह सामाजिक संगठन का आधार है।
(6) समूह से व्यक्तित्व का विकास एवं परिवर्तन कारक है।